बहारे तहरीर

(PART 12)

BY
ABDE MUSTAFA
OFFICIAL

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

बहारे तहरीर

(PART 12)

BY
ABDE MUSTAFA OFFICIAL

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

Contents

सूफ़ी के लिये भी शरीअत है

इमाम शारानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते है के ऐक ऐसा शख्स मेरे पास आया जिसके साथ इसके मुअतक़ीदीन की एक जमाअत थी, वो शख्स बे इल्म था.

उस को फना व बका मे कोई ज़ौक़ हासिल ना था, मेरे पास चंद रोज़ ठहरा, मेने उससे एक दीन पुछा के वुज़ू और नमाज की शर्ते बताओ क्या है?

कहने लगा के मेने इल्म हासिल नहीं किया.

मेने कहा : भाई, क़ुरानो सुन्नत के जाहिर पर इबादत का सही करना लाजिम है।

जो शख्स वाजिब और मुस्तहब, हराम और मकरुह मे फर्क़ नही जानता वो तो जाहिल है और जाहिल की इक़्तेदा ना जाहिर मे दुरुस्त है ना बातिन मे, उस ने इसका कोई जवाब ना दिया और चला गया; अल्लाह तआला ने मुझे उसके शर से बचाया।

(تنبیہ المغترین، الباب الاول، شروعہ فی المقصود، ص19)

मालुम हुआ की लोग तसव्वुफ को क़ुरानो सुन्नत के खिलाफ समझते है, वो शख्स गलती पर है बल्के तसव्वुफ में इत्तेबा ए क़ुरानो सुन्नत निहायत ही जरुरी अम्र है।

अब्दे मुस्तफा

एक सहाबी को बुज़दिल कहा!

हज़रते उम्मे ऐमन (रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) जिहाद का ख़ूब शौक़ रखती थीं।

आप ने जंगे उहुद में हिस्सा लिया, और ज़ख़्मियों की मरहम-पट्टी किया करती थीं। आप ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में भी शरीक हुईं।

आपके बेटे हज़रत ऐमन (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में शरीक न हो सके, तो ये आपको नागवार गुज़रा; और आपने उन्हें आ़र दिलाने के लिए, बुज़दिल और डरपोक कहा!

(अल्लाहु अक्बर)

हज़रत ऐमन शहसवारे सह़ाबा में से थे, और बड़े बहादुर व निडर जंगजू थे। दरअस्ल आपका घोड़ा बीमार हो गया था जिसकी वजह से आप शरीक न हो सके।

हज़रत ह़स्सान इब्ने स़ाबित (रद़ियल्लाहु अ़न्हु) ने अपने अश्आ़र में इसका ज़िक्र किया:

"على حين أن قالت لأيمن أمه،
"جبنت ولم تشهد فوارس خيبر"،

"وأيمن لم يجبن ولكن مهره،
"أضرّ به شرب المديد المخمر"،

"ولولا الذي قد كان من شأن مهره،
"لقاتل فيهم فارسا غير أعسر."

ख़ुलासा: उम्मे ऐमन ने कहा कि तुम बुज़दिल हो, तुम ने ख़ैबर में हिस्सा न लिया, तो हज़रत ऐमन का घोड़ा बीमार था, वो बुज़दिल नहीं थे (वालिदह ने आ़र दिलाने के लिए कहा था), और इनके घोड़े ने आटा मिला हुआ पानी पी लिया। अगर घोड़े की ये हालत न होती, तो वो ज़रूर बहादुरी के जौहर दिखाते।

(دیکھیے اسد الغابہ، الاصابہ، طبقات ابن سعد وغیرہ)

ये थीं मांएं कि ख़ुद भी जिहाद में शरीक होतीं और अपने बच्चों को भी तरग़ीब दिलातीं।

आज तो जिहाद का नाम लेने में भी कुछ लोगों को डर लगता है और यही वजह है कि हम डर डर कर जी रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें बुज़दिली से दूर करे, और शौक़े जिहाद अ़ता फरमाए!

अ़ब्दे मुस्त़फ़ा

तुम घर बैठो, तलवार हमें दे दो

हज़रत उम्मे ऐमन, जिनके बारे में हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि: "मेरी ह़क़ीक़ी मां के बाद, उम्मे ऐमन मेरी माँ हैं."

आप रद़ियल्लाहु अ़न्हा जज़्ब-ए-जिहाद से सरशार थीं, आपने ग़ज़्व-ए-उहुद में अहम किरदार अदा किया.

जब ये अफवाह फैली कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को शहीद कर दिया गया है, तो लोग मैदान छोड़ कर वापस होने लगे, और कुछ तो मदीने में अपने घर तक पहुंच गए. इनकी बीवियों ने कहा कि अफ़सोस है कि आप मैदान छोड़कर भाग निकले.

हज़रत उम्मे ऐमन ने जब ये देखा तो बहुत ग़ुस्सा हुईं, और मैदान से जाने वालों के चेहरे पर मिट्टी डालने लगीं, और कहती कि ये तुम क्या कर रहे हो? मैदान छोड़कर भागना मर्दों का काम नहीं. तुम घरों में बैठो और चरख़ा कातो, और तलवारें हमें दे दो. हम मैदान में दुश्मनों का मुक़ाबला करेंगी!

(देखें 'दलाइलुन् नुबुव्वह' व दीगर कुतुबे सीरत)

ये थीं वो औरतें कि जब तक ज़िंदा रहीं तब तक इस्लाम के नाम से आ़लमे कुफ़्र कांपता रहा। बड़े बड़े बादशाह सिर्फ गिनती के मुसलमानों का नाम सुनकर ख़ौफ़ खाते थे; क्यूंकि उनमें मर्द तो थे ही, साथ में ऐसी औरतें मौजूद थीं।

आज मर्दों का हाल तो अपनी जगह है, और औरतें बजाय इस्लाम को तक़्वियत पहुंचाने के इसे बदनाम करने पर तुली हुई हैं।

आज़ादी के नाम पर दीन व शरीअ़त के ख़िलाफ़ ज़ुबान चलाती हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें अपने घर की औरतों को इस्लाम का सही मफ़्हूम समझाने और तअ़लीमाते नबवी को आम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फरमाए!

अ़ब्दे मुस्त़फ़ा

आँखें नम कर देने वाली यादें

नबी -ए- करीम ﷺ की लाडली बेटी हज़रते सय्यिदा ज़ैनब रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु का निकाह हज़रते अबुल आस रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु से हुआ था। हज़रते अबुल आस जंगे बद्र में मुशरिकीन तरफ़ से थे और जंग के बाद क़ैद किये गये।

मक्का वाले अपने लोगों को रिहा कराने के लिये फिदया भेज रहे थे तो हज़रते सय्यिदा आइशा रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हज़रते ज़ैनब ने भी अपने शौहर के फिदये में कुछ माल भिजवाया और उस में वो हार भी था जो हज़रते खदीजा ने उन्हें शादी के मौक़े पर दिया था।

हज़रते आइशा कहती हैं कि जब हुज़ूर ﷺ ने वो हार देखा तो आप पर रिक़्क़त तारी हो गई।

आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम सब मुनासिब समझो तो इस क़ैदी को रिहा कर दो और ये हार भी इसे वापस कर दो (अल्लाह, अल्लाह ज़रा तसव्वुर करें कि क्या मंज़र होगा)

लोगों ने अ़र्ज़ की कि या रसूलल्लाह! क्यों नहीं, आप का हुक्म सर आँखों पर!

फिर उन्हें रिहा कर दिया गया और हुज़ूर ﷺ ने उन से अहद लिया कि हज़रते ज़ैनब को मदीना आने देंगे और फिर कुछ अर्से बाद हुज़ूर ने अपनी प्यारी बेटी को मदीना बुलवा लिया।

(ملخصاً: ابو داؤد، کتاب الجہاد، حدیث2692)

ज़रा गौर करें कि हक़ की राह में कैसे-कैसे हालात सामने आते हैं।

आज का अगर कोई अमन परस्त शख़्स कहता है कि हमें लड़ने झगड़ने की ज़रूरत नहीं बल्कि मिल कर रहना है और सब को अपने दीन पर छोड़ देना है तो वो बिल्कुल गलत कहता है।

ये हक़ की राह है, इस में सिर्फ खुद को नहीं बल्कि अपनो को भी तकलीफ़ उठानी पड़ती है। जो इस राह पर चलते हैं उन्हें बहुत कुछ देखना पड़ता है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

एक बीवी संभलती नहीं, तो चार कैसे?

ये जुमला बिल्कुल ऐसा है कि एक चक्के से गाड़ी चलती नहीं, तो चार से कैसे चलेगी?

चलिए, जब एक नहीं संभलती तो एक शादी भी क्यूँ करते हैं?

होना तो ये चाहिए कि आप भी उन औलिया की सीरत पर अ़मल करें, जिन्होंने औरतों के हुक़ूक़ के ख़ौफ़ से निकाह़ न किया, जैसा कि हज़रत बिश्-र बिन ह़ारिस़ (रह़िमहुल्लाहु तआ़ला) फरमाते हैं कि मुझे किताबुल्लाह की एक आयत ने निकाह़ से रोक रखा है, कि 'औरतों के हुक़ूक़ हैं', और शायद मैं इसे अदा न कर सकूं!

(देखें: "क़ूतुल् क़ुलूब़", जिल्द: 2, सफ़ा: 816)

अगर एक नहीं संभलती, जिसका मतलब है हुक़ूक़ अदा नहीं हो पाते, तो फिर क्यूँ आप अपने लिए अ़ज़ाब का सामान तैयार कर रहे हैं? आपको तो चाहिए कि इन सूफ़िया की सीरत पर अ़मल करें. अब आप कहेंगे कि हम उन जैसे नहीं हैं, और जब चार शादियों की बात आती है तो भी यही कहा जाता है कि हम पहले वालों जैसे नहीं हैं।

आपको तय कर लेना चाहिए कि आप हैं क्या? और अगर आप बिल्कुल अलग हैं तो क्या आपने अपना दीन भी अलग कर लिया है?

अस्ल में बात हुक़ूक़ की नहीं, क्यूंकि कसरत से ऐसे लोग मौजूद हैं जो 4 बीवियों के हुक़ूक़ आसानी से अदा कर सकते हैं, यहां बात है मुआ़शरे के बनाए हुए बेबुनियाद उसूलों की।

आज अगर हिंदो पाक के अक्सर इलाक़ों में दूसरी शादी की जाए, तो लोग उसे अ़जीब नज़र से देखते हैं, और तरह तरह की बातें करते हैं, आख़िर ऐसा क्यूँ?

इसे ख़त्म करना होगा, ताकि एक मर्द फ़ितरत के मुताबिक़ जाइज़ तरीक़े से फ़ायदा उठा सके, और निकाह़ को आ़म और आसान किया जा सके।

अगर ये न हुआ, तो औरतों की तादाद वैसे भी ज़्यादा है और आगे मज़ीद ज़्यादा हो जाएगी, फिर ज़िना की कसरत होगी, और हम कुछ न कर सकेंगे।

अ़ब्दे मुस्त़फ़ा

अ़ब्दे मुस्तफ़ा : बस एक नाम नहीं पहचान है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा, ये नाम किसी शख्स या किसी तन्ज़ीम के लिये खास नहीं बल्कि हर सुन्नी अ़ब्दे मुस्तफ़ा है।

जिस जिस के आक़ा मुस्तफ़ा करीम हैं वो अ़ब्दे मुस्तफ़ा है।

जैसे सब का खुदा एक है वैसे ही
इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी

अ़ब्दे मुस्तफ़ा एक नाम ही नहीं बल्कि हक़ और बातिल के दरमियान एक पहचान है। खुद को अ़ब्दे मुस्तफ़ा कहने से कतराने वाले और इस में शिर्क का पहलू ढूँढने वाले खुद की निशान देही कर देते हैं कि वो किस तरफ हैं।

आप खुद को अ़ब्दे मुस्तफ़ा कहें, अ़ब्दे मुस्तफ़ा लिखें, हर सुन्नी फख्र के साथ कहे कि हाँ मैं हूँ अ़ब्दे मुस्तफ़ा!

देव के बन्दों से हम को क्या गर्ज़
हम हैं अ़ब्दे मुस्तफ़ा फिर तुझ को क्या

जो सिर्फ़ अ़ब्दुल्लाह होने का दावा करते हैं और अ़ब्दे मुस्तफ़ा कहलाने में जिन्हें शिर्क नज़र आता है वो जान लें कि जब तक कोई हुज़ूर ﷺ को अपना मालिक ना माने तब तक वो ईमान की मिठास नहीं पा सकता।

खौफ़ ना रख रज़ा ज़रा, तू तो है अ़ब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिये अमान है, तेरे लिये अमान है

इबादतें ज़रूरी हैं इंकार नहीं पर जब हम अ़ब्दे मुस्तफ़ा हैं तो,

हम रसूलुल्लाह के, जन्नत रसूलुल्लाह की

हम सब अ़ब्दे मुस्तफ़ा हैं, ये नाम हमारा अ़क़ीदा है, ये नाम हमारी पहचान है और ये नाम हमन दूसरों से अलग करता है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

नबी की तरफ बद्दुआ की निस्बत

हुज़ूर -ए- अकरम सल्लल्लाहु त'आला अलैही वसल्लम की तरफ बद्दुआ की निस्बत करना सही नहीं है।

अगर आप ने किसी के खिलाफ दुआ की है तो भी उसे बद्दुआ कहना बेअदबी है।

आपका कोई फेल बद नहीं है।

बुखारी शरीफ की एक रिवायत की शरह में देवबंदीयों ने सराहत के साथ बद्दुआ की निस्बत हुज़ूर सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम की तरफ की है यह हरगिज़ दुरुस्त नहीं।

अल्लामा गुलाम रसूल सईदी रहिमहुल्लाहू त'आला ने बुखारी शरीफ की शरह करते हुए कई जगह इस पर बहस की है

पहेली जिल्द सफाह 705 पर और इससे पहले भी फिर जिल्द 13 सफाह 806 और चंद मकामात पर लिखते हैं की हुज़ूर सल्लल्लाहु त'आला अलैही वसल्लम का कोई अमल बद नहीं बल्कि हर अमल हसन है लिहाज़ा हुज़ूर ने जो दुआ -ए- ज़रर फरमाई उसे बद्दुआ कहना नाजायज़ है।

(انظر: نعم الباری)

इससे मालूम हुआ के अगर ऐसी रिवायात मिलती हैं जिन में आक़ा -ए- करीम ने गुस्ताखों के लिए दुआ -ए- ज़रर फरमाई तो उसे बद्दुआ नहीं कहेंगे बल्कि इस तरह कहेंगे कि उनके खिलाफ दुआ की या दुआ -ए- ज़रर फरमाई।

अब्दे मुस्तफ़ा

रैप सौंग्स और नात

नात सुनने से इश्के रसूल में इजाफ़ा होता और ये एक इबादत भी है पर इसे भी कुछ लोगों ने खेल कूद का सामान बना लिया है!

कुछ नात पढ़ने वाले गानों की तर्ज़ को अपनाते हैं और कुछ रैप स्टाइल में नात पढ़ते हैं।

इनसे परहेज करना जरूरी है।

बहरुल उलूम अल्लामा मुफ्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहिमहुल्लाहु त्आला लिखते है के अशआर और गीतों के मुख्तलफ वजन और बहरें होती है जिनमें हर किस्म के मज़मून को नज़्म किया जा सकता है और मुखतलफ लहजे और धुन में गाया जा सकता है इसलिए कोई कायदा ए कुल्लिया नहीं बताया जा सकता के फुला फुला तर्ज़ पर नात पढ़नी चाहिए और फुला पर नहीं।

हर नात शरीफ के लिए पुर वक़ार और संजीदा लबो लेहजा होना चाहिए और गैर मुहज्जब लबो लहजे से परहेज़ करना चाहिए।

(فتاوی بحر العلوم، ج5، ص329)

मुफ्ती मुहम्मद क़ासिम जियाउल क़ादरी लिखते है के मशहूर गानों की तर्ज़ पर नात पढ़ना मना है लिहाजा इससे एहतिराज किया जाए।

हां अगर किसी ने नात पर कोई तर्ज़ लगाई और बाद में किसी ने उसी तर्ज पर गाना गाया तो अब उस तर्ज़ पर नात पढ़ने में हरज नहीं।

(فتاوی یورپ و برطانیہ، ص 385)

अब्दे मुस्तफा

औरत चाहे तो

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की साहिबज़ादी हज़रते असमा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा का ये वाकिया तमाम औरतों के लिए सबक है।

जब मदीने की तरफ हिजरत के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदीअल्लाहु त'आला अन्हु रवाना होने लगे तो अपना सारा माल ले लिए जो हज़ारों दिरहम पर मुश्तमिल था।

जब आपने सारा माल ले लिया तो हज़रते अस्मा फरमाती है कि मेरे दादा हज़रत अबू कुहाफ़ा तशरीफ लाए आप उस वक्त देख नहीं पाते थे और मुझसे कहने लगे कि मेरा ख्याल है कि अबू बकर ने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा है और सब कुछ ले लिया है।

हज़रते असमा उन्हें घर के अंदर ले गई और कहा ऐसा नहीं है दादा जान! उन्होंने काफी माल छोड़ा है और फिर आपने पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जमा कर के उस पर कपड़ा रख दिया और जहां हज़रत अबू बकर माल रखते थे वहां रख कर अपने दादा को ले गई और उनका हाथ उस पर रखवा कर कहा की देखीए हमारे लिए काफी माल छोड़कर गए हैं! (अल्लाहु अकबर)

दादा ने कहा कि कोई बात नहीं, जब इतना माल है तो आराम से तुम्हारा गुज़ारा हो सकता है।

आप फरमाती है के अल्लाह की कसम मेरे वालिद ने कुछ भी नहीं छोड़ा था लेकिन मैंने ये हिला सिर्फ दादा को तसल्ली देने के लिए किया था

(حلیۃ الاولیاء وطبقات الاصفیاء، ج2، ص97 ومسند احمد بن حنبل)

अगर औरत चाहे तो अपने शौहर, अपने बाप और अपनी भाई की इज़्ज़त की मुहाफिज़ बन सकती है अगर वह शिकायतें करना शुरू कर दें तो ईज़्ज़त का जनाजा भी निकाल सकती हैं।

सही कहते हैं की कामयाब मर्द के पीछे कहीं ना कहीं औरत का भी हाथ होता है।

अब्दे मुस्तफ़ा

बुरी सोहबत का बुरा नतीजा

हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी रहमतुल्लाह अ़लैह फरमाते हैं : एक शख्स शराबियो की सोहबत में बैठा था। जब उसकी मौत का वक़्त क़रीब आया तो किसी ने कलिमा शरीफ पढ़ने की तलकीन की तो कहने लगा : "तुम पियो और मुझे भी पिलाओ।"

मआज़ अल्लाह बगैर कलमा पढ़े मर गया।

(کتاب الکبائر، ص ۱۰۳، فیضانِ سنت، ص ۴۳۵)

बुरी सोहबत वाक़ई दुनिया व आखिरत में नुक़्सान का बाइस है और अच्छी सोहबत दुनिया व आखिरत दोनों के लिए फाइदेमंद।

जो लोग ये कहते हैं कि हम थोड़ी ये बुराई कर रहे हैं हम तो बस उनके साथ बैठ रहे, वो बड़े धोके में है कि आज ना सही मगर एक दिन वो भी इस बुराई में मुलव्विस हो ही जायेगा जिस बुराई करने वालों के साथ वो बैठे उठे हैं।

इंसान कोइले की भट्टी के क़रीब से भी गुज़रे तो कपड़े ख़राब हो जाते है। ऐसे ही बुरी सोहबतें है जो आप पर अपना बुरा रंग चढ़ा देती है और आप को अंदाज़ा भी नहीं होता।

इसीलिये इंसान अगर दुनिया व आखिरत की भलाई चाहता है तो अच्छों की मजलिस में बैठे और बुरी सोहबतों से परहेज़ करे।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

चार शादी के नुक़सानात

ऐसा हो सकता है कि किसी काम के आगाज़ में हमें कुछ मनफ़ी अ़सरात (Side Effects) नज़र आयें पर ये भी देखना चाहिये कि आगे उस से फाइदा कितना बड़ा है।

जिहाद को ले लीजिये तो इस में लोगों को क़त्ल किया जाता है, खून बहता है और घर बल्कि इलाक़े बरबाद हो जाते हैं लेकिन यही आगे चल कर अमन का सबब बनता है और फितने खत्म होते हैं।

चार शादी का मामला भी ऐसा ही है।

एक तरह से हम अभी सिर्फ आगाज़ करने की ही बात कर रहे हैं क्योंकि तक़रीबन इसका नामो निशान मिट चुका है और ऐसा ही चलता रहा तो ना जाने क्या होगा।

अब चूँकि हालात ऐसे हैं तो ये अजीब क्या बड़ा अजीब लगेगा पर यही हल (Solution) है शादी ब्याह के सिस्टम को सुधारने का वरना लोगों ने सब कुछ कर के देख लिया कुछ खास फ़र्क़ नहीं पड़ा।

इस में पहले उलमा, हुफ्फाज़, मुबल्लिगीन वग़ैरह अहले इल्म हज़रात को आगे आना होगा ताकि वो दूसरों के लिये मिसाल और नमूना बन सकें।

आगे आने का मतलब खुद भी एक से ज़्यादा शादियाँ कीजिये और अपने बच्चों को भी तरगीब दीजिये।

गुर्बत, अद्ल, हुक़ूक़, मुआशरे वग़ैरह की बात जिस तरह की जाती है तो उस हिसाब से एक निकाह भी करने से बचना चाहिये।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

100 साल की सहाबिया को धमकी

ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को शहीद किया और उनकी लाश को सूली पर लटका दिया। फिर उनकी वालिदा हज़रते अस्मा बिन्ते अबू बकर सिद्दीक़ को बुलावा भेजा तो आप रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हा ने साफ इंकार कर दिया।

उसने दोबारा पैगाम भेजा कि मेरे पास चली आओ वरना किसी ऐसे शख्स को भेजूँगा जो तुम्हारे बाल पकड़ कर घसीट कर ले आयेगा।

हज़रते अस्मा ने इंकार कर दिया और कहा कि कह दो कि अब मुझे कोई सर के बालों से ही घसीट कर ले जायेगा!

हज्जाज को खुद हज़रते अस्मा के पास आना पड़ा और उस वक़्त हज़रते अस्मा की उम्र तक़रीबन 100 साल थी पर कोई दांत ना गिरा था और ना अ़क्लो दनिश में कोई कमी थी।

हज्जाज ने कहा तूने देखा मैंने कैसे (तेरे बेटे) अल्लाह के दुश्मन (म'आज़ अल्लाह) को क़त्ल किया तो हज़रते अस्मा ने फ़रमाया कि तूने उसकी दुनिया खराब की और उसने तेरी आखिरत बर्बाद कर दी!

फिर आपने बे खौफ़ हज्जाज को जवाब देते हुये कहा कि हुज़ूर ﷺ से हमने एक कज़्ज़ाब और एक ज़ालिम के बारे में सुना था, कज़्ज़ाब तो हमने देख लिया (जिसने नबी होने का झूठा दावा किया) और वो ज़ालिम तू ही हो सकता है!

इसके बाद हज्जाज को बिना जवाब दिये वहाँ से जाना पड़ा और कहता भी क्या कि सामने एक ऐसी बहादुर खातून मौजूद थी जिन्होंने कई जंगे देखी और लड़ी थी।

(انظر: صحیح مسلم، کتاب فضائل صحابہ، باب ذکر کذاب...الخ، ح6373)

ये वो औरतें थी जिन की नस्लें बहादुर पैदा होती थी।
ज़ालिम बादशाह के सामने भी हक़ कहने से नहीं डरती थी।

आज जो औरतें अपने ही दीन के खिलाफ़ बोलती हुई नज़र आती है, उन्हें अपनी क़िस्मत पर रोना चाहिये कि इन ख़वातीन से फ़ैज़ ना ले सकी।

अल्लाह त'आला मुस्लिम खवातीन को ऐसा जज़्बा अ़ता फरमाये और हमारी नस्लों को मुजाहिदीन की सफ़ में खड़ा होने की तौफ़ीक़ अ़ता फरमाये जो इस्लाम, मुसलमान और मज़लूमों के दिफ़ा के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

जिया करता है क्या यूँ ही मरने वाला?

हमारे पक्के और मज़बूत घरों को देखिये....,
हमारे कपड़ों पर नज़र डालिये....,
हमारा खाना पीना मुलाहिज़ा कीजिये....,
और हमारी ख्वाहिशों की एक फेहरिस्त बनाइये फिर बस एक सवाल को सामने रखिये कि :

जिया करता है क्या यूँ ही मरने वाला?

हमारे हालात देख कर ऐसा लगता है कि हमें मरना ही नहीं है।
हम सफ़र में हैं पर ये भूल गये हैं कि हम मुसाफिर हैं।
हम तो रास्ते को ही मंज़िल समझ बैठे हैं!

जिया करता है क्या यूँ ही मरने वाला?
तुझे हुस्ने ज़ाहिर ने धोके में डाला।

और ये सच जल्द से जल्द जान लिजिये कि :

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है।
ये इबरत की जा है तमाशा नहीं है।

एक पल है कि आप साँसें ले रहे हैं,
बस अगले पल में ये क़िस्सा खत्म हो सकता है।
सब कुछ खत्म और सारी ख्वाहिशें साथ में दफ़्न हो जायेंगी और फिर पछताने के अलावा कोई चारा ना होगा।

जहाँ में है इबरत के हर सू नमूने
मगर तुझ को अंधा किया रंगो बू ने

कभी गौर से भी ये देखा है तूने?
जो आबाद थे वो महल अब हैं सूने!

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है....

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

उर्दू शायरी का जनाज़ा

उर्दू बड़ी प्यारी ज़बान है और जब इस ज़बान में शायरी हो तो फिर क्या बात है।

अशआर तो कई ज़बानों में मिलेंगे पर उर्दू अशआर की बात ही जुदा है।

अफ़सोस की बात ये है कि कुछ लोगों ने इस प्यारी ज़बान की प्यारी शायरी का जनाज़ा निकालने में कोई कसर नहीं छोड़ी!

अब ज़रा ये शेर देखें :

ऐ दीन के गद्दार बुलाऊँ क्या रज़ा को
कर देंगे तड़ी पार बुलाऊँ क्या रज़ा को

फिर ये भी :

तुम लोग यज़ीदी हो बताते हो हुसैनी
चल जायेगी तलवार बुलाऊँ क्या अ़ली को

ये उर्दू शायरी का जनाज़ा ही है। ये शायरी कम और तफ़रीह का सामान ज़्यादा मालूम होता है। एक ये शेर देखें :

हश्मती उन को तेवर दिखा दीजिये
कान पे रख के घोड़ा दबा दीजिये

ऐसी शायरी करने वालों को शायरे हिन्दुस्तान तो पाकिस्तान और उस्ताज़ुश शुअ़रा और ना जाने क्या-क्या कह दिया जाता है।

शायरी ऐसी हो जिस में फ़िक्र व शऊर हो। ऐसे अलफाज़ होने चाहिये कि सुनने और पढ़ने वाला शायर के गहरे अहसासात में खो जाये।

आप आला हज़रत, बिरादरे आला हज़रत और ताजुश्शरिया रहीमहुमुल्लाहु त'आला और भी कई हस्तियाँ हैं कि उनके लिखे गये उर्दू अशआर को पढ़ें फिर आप खुद गौर करें कि आज उर्दू शायरी हो रही है या उस का जनाज़ा निकाला जा रहा है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

बीवी के लिए बैतुल ख़ला में पानी पहुँचाना!

इमाम ग़ज़ाली रहिमहुल्लाहू त'आला अपनी किताब इहया उल उलूम में लिखते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने किसी औरत से निकाह किया और वो हमेशा उस की खिदमत करते रहेते हत्ता की उस औरत को शर्म महेसुस हुई और उसने अपने वालिद से इस बात का ज़िक्र किया कि मैं इस शख़्स से हैरान हूँ कि ये मेरे साथ ऐसा सुलूक करते हैं हत्ता की कई सालों से मैं बैतुल ख़ला भी जाती हूँ तो ये मेरे लिए पानी पहेले पहुँचा देते हैं!

(ملخصًا: احیاء العلوم، ج3، ص402)

ऐसे अगर कोई अपनी बीवी से प्यार करें तो इसे ग़ुलामी कहना ग़लत है।

अगर इस क़दर आप किसी का ख्याल रखेंगे तो उस के माथे पर सींग नहीं लगी हुई है कि वो आपसे लड़ेगी।

अब अगर आप टेढ़ी पसली के साथ टेढ़ी हरकत करेंगे तो फिर पसली तो टूटेंगी।

अल्लाह त'आला हमें अपनी बीवियों के हुक़ूक अदा करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

बेशक़ अल्लाह ने जिन्हें ये ने'अमत दी है उन्हें इस कि क़दर करनी चाहिए और औरतों को भी चाहिए कि अपने सरताज, अपने हाकिम और अपनी जन्नत को हक़ीर हरगिज़ ना समझें।

अब्दे मुस्तफ़ा

आला हज़रत की नसीहत

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत रहीमुल्लाहु त'आला नसीहत करते हुए इरशाद फरमाते हैं!

"देखो नर्मी के जो फवाईद है वो सख़्ती में हरगिज़ हासिल नहीं हो सकते, जिन लोगों के अकाईद मुज़ब्ज़ब हो उनसे भी नर्मी बरती जाए कि वो ठीक हो जाएंगे, ये जो वहाबिया में बड़े बड़े हैं इब्तेदा बहुत नरमी की गई मगर चूंकि उनके दिलों में वहाबियत रासीख हो गई थी और मिसदाक़ ثم لا یعدون

हक न माना उस वक्त सख्ती बरती गई!

(ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت، ص34)

इससे वो लोग नसीहत ले जो हर एक के साथ एक सा सुलूक करते हैं और सब के साथ शिद्दत इख्तियार करते हैं और उसका नतीजा ये होता है कि कई सादा लोह जो अभी गुस्ताख व गुमराह नहीं हुए होते वो भी इनकी शिद्दत देख कर अहले सुन्नत से मुतनफ्फर होते हैं और वहाबियों के हत्थे पड़ जाते हैं और अपना दीन व ईमान बर्बाद कर बैठते हैं!

जो लोग अहले सुन्नत की तबलीग़ करना चाहते हैं वो पहेले उसूल -ए- तबलीग़ सीख ले कि किसके साथ कैसे पेश आना है कहीं ऐसा ना हो कि आप बीमार का इलाज करने जाए और बीमार को मार ही आएं!

अब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर से हमने क्या सीखा?

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ के नीचे एक मर्तबा नर्म बिस्तर बिछा दिया गया तो आप ने फरमाया : मैं दुनिया में आराम करने नहीं आया।

(شمائل ترمذی، ص22)

आप हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र करते थे।

(بخاری و مسلم)

आप एक दिन में दो मर्तबा कभी भी अपने पेट को नहीं भरते थे।

(ترمذی،2356)

आप ने कभी दो दिन मुसलसल गंदुम की रोटी नहीं खाई हत्ता के विसाल हो गया।

(مسلم،7445)

आपने कभी आईन्दा के लिए ज़खीरा नहीं किया।

(ترمذی،2362)

आप अपने घर के काम काज खुद करते थे और अहले खाना का हाथ बटाते बटाते नमाज़ का वक़्त आ जाता तो नमाज़ के लिए निकल जाते।

(بخاری،676)

हम अगर खुद को देखें तो दुनिया से दिल लगा बैठे हैं,
लज़ीज़ खाने वो भी एक दिन में तीन वक़्त!
अच्छे कपड़े, नर्म बिस्तर और फिर आईन्दा के लिए हर चीज़ का ज़खीरा!

अल्लाह त'आला हमें दुनिया की रंगीनियों से बचाए

अब्दे मुस्तफ़ा

एक दिन और गुज़र गया

दिन गुजरते जा रहे हैं!

हर दिन आता है चला जाता है!

हमें लगता है की आज के दिन हमने कई काम किये और तरक़्क़ी के मनाज़िल तय कर लिये पर सच ये है के एक दिन और गुज़र गया!

अगर हम किसी का साथ ना पा सके तो उसके बगैर एक दिन और गुज़र गया!

और अगर हम किसी के साथ थे तो साथ रहने की मुद्दत में एक दिन कम हो गया!

अगर खुश थे तो खुशी का एक दिन और गुज़र गया और गम में थे तो भी एक दिन और गुज़र गया!

खुशी के पलो का गुज़र जाना क़ाबिले अफसोस और गम के दिनो का गुज़र जाना भी क़ाबिले अफसोस है के एक दिन और गुज़र गया!

हम रुके हैं, हम थम से गये हैं पर दिन हमारे इंतेज़ार में नहीं, वो नजरों के सामने से गुज़र जायेगा।

हम आंखें बंद कर लें पर हक़ीक़त है की आज एक दिन और गुज़र गया।

जब गुज़रना ही है इन दिनो को तो फिर हम क्यूं इन्हें रोकने की कोशिश करते हैं?

ना खुशी के लम्हात को पकड़ सकते हैं ना गम की घडियो को रोक सकते हैं!

बस गुज़र रहा है, गुजरता है और गुज़र जायेगा।

हिसाब कोई नहीं के वक़्त किसे क्या से क्या कर गया
बस सच है की आज एक दिन और गुज़र गया

अब्दे मुस्तफा

मोमिन की रफ्तार

इक़बाल मरहूम का एक दुआइया कलाम है

या रब! दिले मुस्लिम को वो ज़िन्दा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गरमा दे, जो रूह को तड़पा दे।

इस का एक शेर है

भटके हुये आहू को फिर सू -ए- हरम ले चल
इस शहर के खोगर को फिर वुस्अ़ते सेहरा दे।

फ़ारसी ज़ुबान में हरन को आहू कहते हैं।
आहू कई खूबियों का मालिक होता है जिन में एक तेज़ रफ्तार भी है।

कहा जाता है :
हरन 90 किलो मीटर फ़ी घंटे की रफ्तार से भी दौड़ सकता है।
(واللہ اعلم)

तेज़ दौड़ना अगर्चे हिरन की फितरत का हिस्सा है लेकिन उसे तेज़ दौड़ने के लिये सेहरा (यानी ऐसा खुला मैदान) चाहिये, जहाँ ना कोई दरख्त हो, ना कोई फ़सल हो, ना कोई रोक रुकावट।

हुआ ये कि :
हरन सेहरा का रास्ता भूल कर शहर में आ घुसा। यहाँ उसे तरह तरह की रुकावटों का सामना करना पड़ा, जिन्होने उस की दौड़ कोताह कर दी।

ये बेचारा दौड़ना चाहता था, लेकिन शहर की बन्दिशों में दौड़ नहीं सकता था।

आप बख़ूबी जानते हैं कि गाड़ी जितनी मर्ज़ी तेज़ रफ्तार हो, रोड के बग़ैर दौड़ नहीं सकती, उस की तेज़ रफ्तार से उसी सूरत महज़ूज़ हुआ जा सकता है जब वो साफ़ सुथरे रोड पर फर्राटे भरे, रास्ते में कोई रुक रुकावट ना हो।

अब शेर समझें!

मुसलमान एक हरन की तरह था, जिस की दुनिया जहाँ फ़तह करने की रफ्तार बहुत तेज़ थी, लेकिन ये भटक गया।

सेहरा -ए- हरम (इस्लामी फ़िक्र के मैदान) की तरफ जाने के बजाये, शहर (फ़िरंगी फ़िक्र) की तरफ जा निकला, जहाँ इसे तरह-तरह की रुकावटें (फैशन, अय्याशी, बे राह रवी, मायूसी, गुलामी, बुज़्दिली वग़ैरह) पेश आयी, जिन्होंने इस की दौड़ कोताह कर दी

अफ्सोस इस पर भी है कि ऐसा क्यों हुआ!

लेकिन.......... इस से ज़्यादा अफ़सोस इस पर है कि :

ये आहू शहर का खोगर (आदी) हो कर,

अपने सेहरा का रास्ता भूल बैठा।

ऐ मेरे रब! मै इस भटके हुये आहू की फरियाद किस से करूँ......!!

मेरे मालिक! तुझ से अ़र्ज़ है कि इस

भटके हुये आहू को, फिर सू -ए- हरम ले चल
इस शहर के खोगर को फिर वुस्अ़ते सेहरा दे।

अ़ल्लामा क़ारी लुक़्मान शाहिद हफिज़हुल्लाहु त्आला

नसीहत

किसी बादशाह ने किसी बुज़ुर्ग से कहा था कि हज़रत मुझे नसीहत कीजिये तो बुज़ुर्ग ने बस एक जुमला कहा और बादशाह को अपनी हैसियत मालूम हो गयी फिर खूब रोने लगा!

बुज़ुर्ग ने कहा कि :
"तुम से पहले भी कई लोग बादशाह थे"
अल्लाहु अकबर

ये नसीहत करने वाले भी जुदा थे और नसीहत को समझने वाले भी हमसे अलग थे

आज किताबें भरी पड़ी हैं नसीहतो से, हर शय इबरत का सामान है और मौत जैसा सच सामने है,।पर हाये रे गफलत!
आह गाफ़िल इन्सान!

किस चीज़ ने मुतास्सिर किया है आपको?
कौन सी चीज़ बाक़ी रहेगी?
अपने भी अपने नहीं अस्ल में, फिर कैसी ये गफ्लत?

हक़ीक़त नज़र के सामने है, जितनी जल्द देख कर तस्लीम कर लेंगे उतना फायदा होगा वरना उम्मीदों और ख्वाहिशात के सहारे अगर सफर को जारी रखा तो ना मंजिल मिलेगी और ना वापस आने का रास्ता!

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

ऐसा लगता है?

क्या कभी-कभी आप को ऐसा नहीं लगता कि हम अपनी इस्लाह कर लें यही काफ़ी है?

अच्छी बात है कि लोगों की इस्लाह की जाये पर ऐसा महसूस होता है कि हमें सब से ज़्यादा इस्लाह की ज़रूरत है।

हम दूसरों को पहचानने निकले हैं कि कौन कैसा है पर क्या ये हक़ीक़त नहीं कि अब तक हमने खुद को नहीं पहचाना?

जो खुद को ना पहचान सका वो दूसरों की पहचान में धोका खा सकता है क्योंकि जो ज़ाहिर हो वही बातिन नहीं होता।

हम खूब कहते हैं पर क्या हम खूब जानते हैं?

कहा जाता है कि कहने वाले जानते नहीं और जानने वाले कहते नहीं!

दूसरों पर कोशिश के लिये वक़्त सर्फ करना बेहतर पर अपने लिये फुरसत का वक़्त तलाश कीजिये फिर खुद को बदल कर देखिये,

खुद से लड़ कर देखिये,

खुद को पहचानने की कोशिश कीजिये,

खुद की इस्लाह कर के देखिये....

जब बर्तन भर जाये तभी लबरेज़ हो कर पानी बाहर गिरता है वरना सिर्फ आवाज़ आती है।

आवाज़ नहीं बल्कि हक़ीक़त बनने की कोशिश कीजिये

आवाज़ आती है और गुम हो जाती है पर हक़ीक़त बाक़ी रहती है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मक़्सदे ज़िंदगी

हर इन्सान का मक़्सदे ज़िंदगी अल्लाह त'आला की बन्दगी है।

इरशादे बारी त'आला है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ

"और मैं ने जिन और आदमी इसी लिये बनाये की मेरी इबादत करें"

गोया मा'लूम हुआ की हम दुन्या में कुछ मुद्दत के लिये आये हैं और मक़्सद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को राजी करना है।

हदीस :

اِنَّ الدُّنیاَ خُلِقَتْ لَکُمْ وَاَنْتُمْ لِلاٰخِرَۃِ

के ये दुन्या तुम्हारे लिये पैदा की गयी है और तुम्हें आखिरत के लिये पैदा किया गया है।

(احیا العلوم الدین لامام الغزالی)

इस फरमान के पेशे नज़र हमें दुन्या में रह कर आखिरत की तैयारी करनी है।

और ये आखिरत की तैयारी मर्द व औरत दोनो की जिम्मेदारी है।

आज तनज़्ज़ूली का दौर है और हमारी ख्वातीन दुन्या परस्ती की ऐसी दौड में लग गयी हैं की वोह अपना असल किरदार और मक़ाम भुल गयी हैं!

अक्सर ख्वातीन ने चरागे महफिल बनने को ही जींदगी का मक़्सद समझ लिया है!

जो शरीफ या कद्रे दीनदार घराने हैं उन की ख्वातीन फक़्त घर और बच्चों की देख भाल को ही मक़्सदे जींदगी समझती हैं।

मगर तारीख़ पर नज़र करें तो पता चलता है की ख्वातीने इस्लाम ने दाइरा-ए-इस्लाम में रह कर ही इल्म व अदब और तालीम व तदरीस के मैदान में उलूमे क़ुरान, उलूमे हदीस, उलूमे फिक़्ह व दीगर मुतादवाला उलूम, रोज मर्राह की मुआशरत और जिहाद वगैराह गरज की हर मैदान में अपने ज़ौहर दीखायें हैं।

हमारी ख्वातीन को भी चाहिये की अपने अंदर दीनी ज़ौक पैदा करें और अस्लाफ का किरदार अपने सामने रख कर अपनी जींदगी का मक़्सद हासिल करें।

दुखतरे मिल्लत
(रुक्न अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशिअल)

किन की लिखी हुयी नातें सुनें और पढ़ें?

नात शरीफ पढ़ना और सुनना दोनों इबादत और सआदत है।

नात शरीफ पढ़ना सहाबा ए किराम अलैहिमुर रिदवान की सुन्नत है की असहाबे रसूल भी सरकारे वाला तबार ﷺ की बारगाह में नात सुनाने का शर्फ हासिल करते थे।

अब ये सवाल ज़हन मे आता है की नात तो कई एक लोगों ने लिखी है तो किस के कलाम सुनने और पढ़ने चाहिये जो शरई गलतियों से पाक हो।

इसी लिये कुछ मोअतबर और मुसतनद बुजुर्गों के असमाए गिरामी हाजर हैं जिन के क़लाम अल्हम्दुलिल्लाह गलतियों से पाक हैं :

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खां बरैल्वी

(حدائقِ بخشش)

शहजादा ए आला हज़रत हुज्जतूल इस्लाम अल्लामा हामिद रज़ा खां बरैल्वी

(بیاضِ پاک)

शहजादा ए आला हज़रत मुफ्तिये आज़म हिन्द अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खां नूरी बरैल्वी

(سامانِ بخشش)

खलीफा ए आला हज़रत सदरुलफाज़िल अल्लामा सय्यद नइमुद्दिन मुरादाबादी

(ریاضِ نعیم)

खलीफा ए आला हज़रत मुहद्दीसे आज़म सय्यद मुहम्मद अशरफ किच्छोछवी

(فرش پر عرش)

बिरादरे आला हज़रत, मौलाना हसन रज़ा खां बरैल्वी

(ذوق نعت)

खलीफा ए आला हज़रत मद्दहाहुल हबीब अल्लामा जमीलुर रहमान क़ादरी रज़वी बरैल्वी

(قبالۂ بخشش)

मुफस्सिरे शहीर हक़ीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खां नईमी

(دیوانِ سالک)

हुजूर ताजुश्शरियाह अल्लामा मुफ्ती अख्तर रज़ा खां अज़हरी बरैल्वी

(سفینۂ بخشش)

अमीरे अहले सुन्नत हज़रत मौलाना इलयास अत्तार क़ादरी रज़वी

(وسائلِ بخشش)

शेखुल इस्लाम अल्लामा सय्यद मदनी मियां अशरफी जिलानी

(بارانِ رحمت)

अब्दे मुस्तफ़ा

कुछ करना होगा

बैठने से काम नहीं चलेगा!

कुछ तो करना होगा!

सोचना अच्छा है पर सिर्फ सोचना अच्छा नहीं!

कम से कम अपनी सोच, अपनी फ़िक्र, अपने ख्याल का इज़हार कीजिये ताकि दूसरों के लिये वो एक मक़्सद बन जाये।

आप क़ादिर हैं जिस पर वो तो करें,

हर शख्स अपना बेहतर दिखाने की कोशिश करे।

सुकूत मौत है।

कोहराम मचाना होगा।

जिस शोबे में जायें तो अपनी पूरी ताक़त लगा दें।

हार उसी वक़्त मानें जब आखिरी साँस आ जाये।

तसल्सुल के साथ थोड़ा अ़मल भी खूब फाइदा देता है।

आज से शुरु करें जो आप कर सकते हैं, ना सोचें कि आप के बस का नहीं बल्कि उतर जायें मैदान में।

करना ही होगा वरना कौन आयेगा?

क्या हम सब एक दूसरे पर इल्ज़ाम देते रहेंगे या खुद अपनी ताक़त के मुताबिक़ और अपनी सलाहिय्यतों के मुताबिक़ मैदाने अ़मल में आयेंगे?

फैसला आप का है कि या तो मौक़ों के इंतिज़ार में इंतिज़ार बन जायें या खुद मौक़ा बन कर आगे बढें।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

मुहब्बत की हक़ीक़त और दिल की हालत

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं :

एक दफा मैंने एक मज़्जुब (यानी मजनू, दीवाना) देखा उसे बच्चे पत्थर मार रहे थे, उसका चहेरा और सर लहू लुहान और शदीद ज़ख्मी था!

हज़रत सैय्यदना शिबली अलैहिर्रहमा उन बच्चो को डांटने लगे तो उन्होंने कहा :

"हमें छोड़ दो! हम इसे क़त्ल करेगे क्योंकि ये काफ़िर है! और कहता है कि उसने अपने रब अज़्ज़वजल को देखा है और वो इस से कलाम भी करता है।"

तो आप अलैहिर्रहमा ने बच्चों से फरमाया :

उसे छोड़ दो, फिर आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह उस के पास तशरीफ़ ले गए तो वो मुस्कुरा कर बातें कर रहा था और कहेने लगा :

"ए खूबसूरत नौजवान! आप का एहसान है, ये बच्चे तो मुझे बुरा भला कह रहे थे।"

उस के बाद उस ने पूछा : "वो मेरे मुताल्लिक़ क्या कहे रहे थे?" आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने उस को बताया : "वो कहते है कि तुम अपने रब अज़्ज़वजल को देखने का दावा करते हो और ये की वो तुमसे कलाम भी करता है।"

ये सुन कर उस ने ज़ोरदार चीख मारी, फिर कहेने लगा :

"ए शिबली! हक़ त'आला की मुहब्बत व क़ुरबत से मुझे सुकून मिलता है, अगर लम्हा भर भी वो मुझ से जाए तो मैं दर्दे फ़िराग से पारा पारा हो जाऊं।"

हज़रत सैय्यदना सिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं मैं समझ गया कि ये मज़्ज़ूब इखलास वाले खास बंदों में से है,

मैंने उस से पूछा : "ए मेरे दोस्त!

मुहब्बत की हक़ीक़त क्या है?"

तो उस ने जवाब दिया :

"ए शिबली! अगर मुहब्बत का एक क़तरा समन्दर में डाल दिया जाए (तो वो खुश्क हो कर) या पहाड़ पर रख दिया जाए तो वो गुबार के बिखरे हुए बारीक ज़र्रे हो जाएं! लिहाज़ा इस दिल पर कैसा तूफान गुज़रेगा जिस को मुहब्बत ने इज़्तेराब और गिरया व ज़ारी का लिबास पहना दिया हो, और सख़्त प्यास ने उस के अंदर जलन और हसरते दीदार को बढ़ा दिया हो।"

(الروض الفائق، ص35)

अल्लाह अल्लाह!

वाक़ई मुहब्बत कोई आम शै नहीं, ये आशिक़ को जला देती है।

अगर मुहब्बत का एक क़तरा समन्दर को खुश्क कर सकता है और पहाड़ों को बिखरने पर मजबूर कर सकता है तो फिर दिल के साथ जो मुआमला होता है वो अल्फ़ाज़ से किस तरह बयान किया जा सकता है।

अब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION